Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

नरेन्द्र मोदी कार्यकाल में भारत की गतिशील विदेश नीति

राजेश कुमार
पी०एच०डी०, शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग,
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

डॉ0 सीमा देवी
शोध निर्देशिका
राजनीति विज्ञान विभाग,
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 85-93

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 25 Jan 2021
Published : 05 Feb 2021

सरांश

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत विश्व में सुदृढ़ एवं सशक्त विदेश नीति के लिये जाना जाता है, साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल अपना सामंजस्य स्थपित करने में भी भारतीय विदेश नीति सदैव सफल रही है। 1947 से अब तक भारत को विदेश नीति के क्षेत्र में कई मुकाम हासिल हुए है, और अनेकानेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है।

मई, 2014 में जब नरेन्द्र मोदी ने सत्ता संभाली तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में कुछ नया व खास करने की अपेक्षाऐं पाली जाने लगी थी क्योंकि नरेन्द्र मोदी भी यर्थाथवादी सोच से सम्पन्न व्यक्ति है तथा राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति सर्वोच्च स्तर पर रखने वाले है। नरेन्द्र मोदी ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प अपने शासन संभालने के समय ही ले लिया था और आज भी उस पर निरन्तर प्रगति करते हुए चल रहे है।

प्रधान मंत्री के रूप में मोदी खुद एक राजनयिक सफलता थे और सभी आठ पड़ोसी सार्क देशों के प्रमुख और मारीशस के साथ इस समारोह में उपस्थित थे। नरेन्द्र मोदी की पड़ोसी पहले नीति ने भारत के सापेक्ष पड़ोसियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है। शपथग्रहण समारोह में मोदी के निमंत्रण के लिए एक संकेत के रूप में पाकिस्तान और श्रीलंका ने सैकड़ों भारतीय मछुआरों को छोड़ दिया, जिन्हें लंबे समय से कैद किया गया था। अपनी पहली विदेश नीति में नेपाल और भूटान को अपनी यात्रा का प्रथम गन्तव्य बनाने के मोदी के फैसले का अनुपालन किया जाना चाहिए क्योंकि दोनों देशों के पास पनबिजली बनाने की व्यापक क्षमता है। मोदी 3 अगस्त 2014 को काठमांडू गए थे, 17 साल में मोदी भारत के पहने प्रधान मंत्री थे, जहां उनका हवाई अड्डे पर प्रोटोकाल के खिलाफ खुद नेपाली प्रधान मंत्री द्वारा स्वागत किया गया था।

भारतीय विदेश नीति नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सफलताओं के चरम पर पहुंच रही है। भारत विकसित राष्ट्रों की कगार पर पहुंचने को तैयार है। विश्व का छोटे से छोटा और बडे से बड़ा राष्ट्र आज भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना करने को आतुर है। एशिया की सुपर पावर तो भारत है ही, वह विश्व की महाशक्तियों के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

समकक्ष आता जा रहा है। अमेरिका जैसी महाशक्ति आज भारत के साथ अच्छे संबंध रखने को आतुर है, तृतीय विश्व भारत के नेतृत्व को स्वीकार कर रहा है, इसके साथ ही 21 वीं सदी एशिया की होगी इसे भी सार्थक कर दिया है।

मुख्य शब्द :– अन्तर्राष्ट्रीय, सामंजस्य, यर्थाथवादी, दृष्टिकोण, शपथग्रहण, पनबिजली, प्रोटोकाल, महाशक्ति।

विदेश नीति के माध्यम से प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तथा अभिवृद्धि सुनिश्चित करता है। भारत भी अपनी विदेश नीति को अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के सन्दर्भ में निर्धारित और लागू करता है। भारत ने शुरू से ही स्वंयम को गुटों की राजनीति से अलग रखा है। और यह नीति समय की कसौटी पर खरी भी उतरी है। राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता के युग में भारत सभी देशों के साथ शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व पर आधारित मैत्री को प्रोत्साहित करने वाली विदेश नीति पर चलता आया है। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों में भी भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत विश्व में सुदृढ़ एवं सशक्त विदेश नीति के लिये जाना जाता है, साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल अपना सामंजस्य स्थपित करने में भी भारतीय विदेश नीति सदैव सफल रही है। 1947 से अब तक भारत को विदेश नीति के क्षेत्र में कई मुकाम हासिल हुए है, और अनेकानेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है। भारत की विदेश नीति का विश्व व्यवस्था, द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सम्बन्धों, नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था आदि के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान है। विदेश नीति के निर्धारण में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तत्व राष्ट्रीय हित कहा जाता है। भारतीय विदेश नीति के आधार व स्वरूप के निर्धारण में भी राष्ट्रीय हितों की सर्वाधिक भूमिका है और इसके अलावा हमारी और आवश्यकताऐं है, हमारे पड़ौसी राष्ट्रों से हमारे सम्बन्ध तथा विश्व व्यवस्था के संचालन में हमारी भूमिका आदि का भी भारतीय विदेश नीति के निर्धारण मे प्रमुख योगदान है।

इन सबके अतिरिक्त भारतीय विदेश नीति के निर्धारण एवं क्रियान्वयन पर तत्कालीन नेतृत्व का भी गहरा प्रभाव रहा है। भारत की विदेश नीति के निर्धारण में जवाहर लाल नेहरू का अमिट प्रभाव रहा है क्योंकि विदेश नीति के सिद्धान्तों का प्रथमतया निर्धारण उन्होंने ही किया था, वो सिद्धांत कमावेश आप भी निरन्तर बने हुए है, परन्तु राष्ट्रीय हितों की आवश्यकतानुसार नये सिद्धान्तों ने भारतीय विदेश नीति में अपनी जगह बना ली है। जवाहर लाल नेहरू के समय आदर्शो के दामन में लिपटी हुई भारतीय विदेश नीति और आदर्शो की खातिर कुछ राष्ट्रीय हितों का त्याग भी हमें करना पड़ा है। इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति ने यर्थाथवाद का जामा पहना और राष्ट्रीय हितों की सर्वोच्चता बरकरार रही तथा विश्व के भूगोल को बदलने का महान कृत्य भी अन्जाम दिया गया। जनता पार्टी के शासन में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में असली गुटनिरपेक्षता पर आधारित यर्थाथवादी विदेश

नीति हमने अपनाई और 1990 के दशक में विश्वस्तर पर आये अनेकानेक परिवर्तनों के फलस्वरूप भारतीय विदेश नीति भी समयानुकूल परिवर्तनों को समावेशित करने में सफल रही।

भारत ने वैश्वीकरण उदारीकरण और निजिकरण की लहर में अपने राष्ट्रीय हितों के अनुकूल आर्थिक सुधारों और उदारीकरण की नीति को अपनाया तथा आर्थिक सम्बन्धों को द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सम्बन्धों में सर्वोच्च स्तर पर रखा। इस दौर में विश्व स्तर पर यह नीति प्रचलित थी कि किन्ही दो या अनेक राष्ट्रों में अन्य सम्बन्धों के न रहते हुए भी आर्थिक सम्बन्ध स्थापित किए जा सकते थे और भारत द्वारा भी उक्त नीति का अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति के लिए पालन किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत ने परमाणु क्षमता के क्षेत्र में ऊँची छलांग लगाई और 51 राष्ट्रों की पंक्ति में आ खड़ा हुआ क्योंकि पड़ौसी राष्ट्रों व आस–पास की परिस्थितियों को दृ ष्टि में रखते हुए आर्थिक हितों से पहले राष्ट्रीय सुरक्षा की महत्ता को समझा एवं तद्नुसार परमाणु परीक्षण का निर्णय लिया। यू0पी0ए0 के शासन काल के दौरान मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत विश्व की सबसे महान तकनीकी शक्ति राष्ट्र अमेरिका के साथ समस्तर रिश्ते बनाने में सफल हुआ और बिना हस्ताक्षर किये परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के साथ परमाणु ऊर्जा के उपयोग व आयात में सफलता प्राप्त की।

मई, 2014 में जब नरेन्द्र मोदी ने सत्ता संभाली तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में कुछ नया व खास करने की अपेक्षाऐं पाली जाने लगी थी क्योंकि नरेन्द्र मोदी भी यर्थाथवादी सोच से सम्पन्न व्यक्ति है तथा राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति सर्वोच्च स्तर पर रखने वाले है। नरेन्द्र मोदी ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प अपने शासन संभालने के समय ही ले लिया था और आज भी उस पर निरन्तर प्रगति करते हुए चल रहे है।

नरेन्द्र मोदी के सत्ता संभालते ही भारतीय विदेश नीति के स्वरूप में कई परिवर्तन परिलक्षित होने लगे। इन बदलावों का उद्देश्य है भारत अभिजात राष्ट्रीय हितों को बचाना और उन्हें संरक्षित करना। साथ ही भारत की विदेश नीति में अभी तक स्थापित मूल आदर्शे जिन्हें स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के वास्तुकार जवाहर लाल नेहरू ने परिभाषित किया था, को कायम रखने के बावजूद एशियाई सदी के बहुत बड़े सन्दर्भ में भारतीय सदी बनाना भी इन बदलावों का उद्देश्य है। नेरन्द्र मोदी ने भारत संभालते ही द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सम्बन्धों का दायरा विस्तृत कर लिया है। भारत की विदेश नीति में ढुलमुल व अस्पष्ट रवैया अतीत की बात हो चुकी है।

हालांकि भारत आज भी विश्व शान्ति तथा शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की आधारभूत नीतियों में विश्वास रखता है परन्तु अपने राष्ट्रीय हितों पर आँच आने पर एक अलग सोच भी रखता है तथा वैश्विक स्तर की गतिविधियों पर खुलकर अपना पक्ष अभिव्यक्त करता है। नेरेन्द्र मोदी का "मैक इन इण्डिया" कार्यक्रम एशिया को एक बड़ी शक्ति बनाने के क्रम में एक महत्वपूर्ण प्रयत्न माना जा सकता है।

भारत और पड़ौसी देश – मोदी की पड़ौस नीति

भारतीय राजनीति ने 2014 में एक मौलिक परिवर्तन देखा। 30 सालों बाद, एक पार्टी को संसद में पूर्ण बहुत मिला। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के तहत देश की घरेलू नीतियों के साथ–साथ विदेश नीति गतिशील सकारात्मक और विकास उन्मुख हो गई। उन्होंने समय के विस्तार को फिर से तैयार किया, देश की इच्छा ने अपनी गरिमा, आत्म सम्मान शक्ति का रेखांकन किया और दोस्ती और सहकारिता का संदेश दिया। सरकार में बदलाव के बाद हर देश की विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन के तत्व होते है। यह उल्लेखनीय है कि शपथ ग्रहण समारोह में, प्रधान मंत्री के रूप में मोदी खुद ही एक राजनयिक सफलता थे और सभी आठ पड़ोसी सार्क देशों के प्रमुखों ने मारीशस के साथ समारोह में भाग लिया। नरेन्द्र मोदी की पहले पड़ोसी नीति ने भारत पर पड़ोसियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है।

मोदी सरकार द्वारा उठायी गयी प्रमुख नीतिगत पहलों में से एक दक्षिण एशिया में अपने तत्काल पड़ोसियों पर ध्यान केंद्रित करना है। प्रधान मंत्री बनने से पहले, नरेद्र मोदी ने संकेत दिया था कि उनकी विदेश नीति भारत के तत्काल पड़ोसियों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने पर सक्रिय रूप से ध्यन केंद्रित करेगी, जिसे मीडिया में पहले 'पड़ोसी नीति' के रूप में परिभाषित किया जा रहा है और उन्होंने सरकार के सभी राज्य–सरकार प्रमुखों को अपने उद्घाटन में आमंत्रित करके अच्छी शुरूआत की ओर दूसरे दिन कार्यालय में दक्षिण एशियाई देशों के साथ व्यक्तिगत रूप से द्विपक्षीय वार्ता की, जिसे मीडिया द्वारा मिनी सार्क शिखर सम्मेलन के रूप में करार दिया गया था। बाद में एक समारोह के दौरान उन्होंने भारतीय वैज्ञानिकों से कहा है कि दक्षिण एशिया के लोगों के साथ टेली मीडिसिन, ई–लर्निंग आदि जैसे प्रौद्योगिकी के फल को साक्षा करने के लिए वर्तमान में इस क्षेत्र में भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के लिए एक समर्पित सार्क उपग्रह–2 विकसित करने का प्रयास करें।

मोदी विदेश नीति, भारत को अधिक प्रतिस्पर्धी, आश्रवस्त और सुरक्षित देश के रूप में बदलने के लिए तैयार होती है। एक मजबूत विदेश नीति, हालांकि, एक मजबूत घरेलू नीति की नींव पर ही स्वयं को बनाए रख सकती है। उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी के चुनाव प्रचार के दौरान विदेश नीति का मुश्किल से उल्लेख किया गया था। फिर भी, कार्यालय में अपने पहले वर्ष के दौरान प्रधान मंत्री मोदी विदेश नीति क्षेत्र में सबसे गतिशील नेताओं में से एक के रूप में उभरे हैं। उन्होंने विभिन्न द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय शिखर सम्मेलनों में अपनी भागीदारी के साथ उद्देश्य और उत्साह का एक नया रूझान प्रदर्शित किया है जबकि आर्थिक गतिविधियां उनकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा है, उन्होंने सफलतापूर्वक लोकतांत्रिक मूल्यों, बौद्ध धर्म और योग के प्रचार जैसे साफ्ट पावर का इस्तेमाल किया है, और भारत के प्रभाव को प्रक्षेपित करने के लिए प्रवासियों तक पहुंचे हैं।

जब से उन्होंने मई 2014 में भारत के प्रधान मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला है, तब से नरेन्द्र मोदी ने विदेश नीति को अपने प्रशासन का आधार बना दिया है। मोदी जी ने अपनी सबसे महत्वपूर्ण पहल 'पड़ोसी प्रथम' को निरंतरता में कार्यालय संभाले जाने से पहले ही शुरू कर दी थी। बांग्लादेश के साथ संबंधों ने एक निर्णायक

भूमि सीमा समझौते के भारत द्वारा अनुसमर्थन के साथ चढ़ाव देखा है, जो कुछ 40 वर्षो के लिए लंबित था। श्री लंका के साथ संबंधों को एक मजबूती तब मिली, जब उस देश में वर्ष की शुरूआत में राष्ट्रपति चुनाव के परिणामस्वरूप महेंद्रराजपक्षे की जगह राष्ट्रपति के रूप में मैथ्रिपाला श्रीलंका के चुनाव के साथ घरेलू नेतृत्व में परिवर्तन हुआ। मोदी ने मार्च में श्रीलंका का दौरा किया, जो 30 साल में एक भारतीय प्रधान मंत्री की पहली यात्रा थी।

मोदी अपने देश की विदेश नीति और घरेलू परिवर्तन के बीच एक करीबी गठजोड़ स्थापित करने में काफी सफल रहे हैं। उन्होंने भारतीय उत्पादों के लिए विदेशी बाजार खोलते हुए विदेशी पूंजी और तकनीक को आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन्होंने मेर मैक इन इण्डिया, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटीज, क्लीन गंगा, स्वच्छ भारत और कौशल भारत जैसे अपने सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों का आक्रामक रूप से विपणन किया है।

दक्षिण एशिया में प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति

प्रधान मंत्री के रूप में मोदी खुद एक राजनयिक सफलता थे और सभी आठ पड़ोसी सार्क देशों के प्रमुख और मारीशस के साथ इस समारोह में उपस्थित थे। नरेन्द्र मोदी की पड़ोसी पहले नीति ने भारत के सापेक्ष पड़ोसियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है। शपथ ग्रहण समारोह के लिए मोदी के निमंत्रण के लिए एक संकेत के रूप में दोनों पाकिस्तान और श्रीलंका ने सैकड़ों भारतीय मछुआरों को छोड़ दिया, जिन्हें लंबे समय से कैद किया गया था। मोदी सार्क में मजबूती से विश्वास करते हैं और क्षेत्रीय सहयोग और विकास संबंधी गतिविधियों को मजबूत करने में इसकी क्षमता के प्रति आशान्वित हैं। भारत ने पहले ही इस क्षेत्र में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए तीन प्रस्तावों को रखा है और वे थे– राष्ट्रीय सीमाओं से परे वाहनों के निर्बाध प्रवास के लिए सार्क सदस्य राज्यों के बीच यात्री और कार्गो वाहन ट्रैफिक का विनियमन, अंतर्राष्ट्रीय रेल सेवा के लिए रेल पर सार्क क्षेत्रीय समझौता और उपमहाद्वीप, जिसे कि अक्सर विश्व में ऊर्जा के लिए सबसे भूखे क्षेत्र के रूप में माना जाता है, में ऊर्जा व्यापार के लिए ऊर्जा सहयोग (विद्युत) के लिए सार्क फ्रेमवर्क करार। शपथ ग्रहण समारोह में मोदी–शरीफ उम्दा–रिश्तों ने उम्मीद जताई कि दोनों पड़ोसियों के बीच बातचीत की गुणवत्ता में बदलाव आएगा। लेकिन पाकिस्तान ध्वस्त हो रहा है, इसलिए भारत को दूसरे सार्क देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने पर अपनी ऊर्जा का निर्देशन करना चाहिए।

अपनी पहली विदेश नीति में नेपाल और भूटान को अपनी यात्रा का प्रथम गन्तव्य बनाने के मोदी के फैसले का अनुपालन किया जाना चाहिए क्योंकि दोनों देशों के पास पनबिजली क्षमता की व्यापक क्षमता है मोदी ने नेपाल को पहले कुछ देशों में से एक के रूप में चुना क्योंकि वे मोदी सरकार की संपूर्ण पड़ोस नीति में नेपाल के महत्व को दर्शाते हैं। मोदी 3 अगस्त 2014 को काठमांडू गए थे, 17 साल में मोदी भारत के पहने प्रधान मंत्री थे, जहां उनका हवाई अड्डे पर प्रोटोकाल के खिलाफ खुद नेपाली प्रधान मंत्री द्वारा स्वागत किया गया था।

नरेन्द्र मोदी ने राजा जिग्मेखेसर नेमगैल वांगचुक और तोबगे के निमंत्रण के बाद भूटान की अपनी पहली विदेश यात्रा की। इस यात्रा को मीडिया ने आक्रामक आकर्षण के रूप में कहा जो कि भूटान – चीन संबंधों की जांच भी करेगा जो कि हाल ही में औपचारिक रूप से तैयार किए गए थे। उन्होंने हाइड्रो–इलेक्ट्रिक डील सहित व्यापार संबंधों का निर्माण करने की भी कोशिश की ओर भारत वित्तपोषित भूटान के सुप्रीम कोर्ट भवन का उद्घाटन किया।

भारत को तीस्ता जल–साक्षाकरण समझौते और भूमि सीमा समझौतों को पूरा करना चाहिए तथा इसके साथ–साथ बांग्लादेश से अवैध आप्रवासियों पर सांप्रदायिक बयानबाजी के कारण हुए नुकसान को सम्भालना चाहिए। श्रीलंका सरकार ने भारतीय मछुआरों को रिहा कर और लश्कर–ए–ताइबा पर सूचनाओं को साझा कर सद्भावना का परिचय दिया है। हालांकि, भारत को स्पष्ट रूप से दोहराना चाहिए कि श्रीलंका के संविधान का तेरहवां संशोधन श्रीलंकाई तमिलों के भेदभाव को खत्म करने का आधार है।

मोदी ने भारत की अर्थव्यवस्था को सही दिशा देने के लिए, एक मजबूत जनादेश के साथ शुरूआत से प्राथमिकता के रूप में विदेश नीति को रेखांकित किया हैं। मोदी को भारत की उभरती हुई शक्ति के दर्जा को पुनर्जीवित करने की आकांक्षा है, जो हाल के वर्षो में खराब आर्थिक वृद्धि के कारण बिगड़ी हुई थी। उन्होंने भारत की विदेश नीति में न केवल फोकस और महत्वाकांक्षा को इंजेक्ट किया है, बल्कि भारत की अर्थव्यवथा को बदलने के लिए अपनी योजनाओं से सीधे जोड़ रखा है। सितंबर 2014 में लान्च किया गया 'मेक इन इंडिया' नरेन्द्र मोदी का हस्ताक्षर कार्यक्रम बन गए हैं क्योंकि वह भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलने की इच्छा रखते हैं। इसलिए उनके विदेश नीति मंत्र, भू–अर्थशास्त्र से जोरदारी से प्रेरित होते हैं। विशेष रूप से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) को आकर्षित करना और साथ ही दक्षिण एशिया में भारत की नेतृत्व की भूमिका को मजबूत करने का प्रयास किया जाता है। यह शपथ ग्रहण समारोह में लंक्षित है।

नरेन्द्र मोदी कार्यकाल में भारत–चीन सम्बन्ध

सत्ता में आने के बाद प्रधान मंत्री मोदी ने अमेरिका और जापान के साथ गठबंधन को मजबूत करते हुए चीन के विस्तार को बेअसर करने का कार्य सावधानीपूर्वक किया है, यह ऐसा कार्य है, जो जवाहरलाल नेहरू के समय के दौरान संभव नहीं था और नेहरू के बाद कांग्रेस सरकारों के दौरान भी संभव नहीं था। ऐसा लगता है कि चीनी सरकार द्वारा चलाये जाने वाले अखबार ग्लोबल टाइम्स के जरिये युद्ध जैसी बयानबाजी के बावजूद भारत के पक्ष में समाधान के सकारात्मक कूटनीतिक परिणाम सामनें आये। चीनी मीडिया न सिर्फ सीमावर्ती आमना–सामना को लेकर भारत को दोष दिया, बल्कि इसके परिणामस्वरूप दिल्ली को भी गंभीर नतीजे भुगतने की धमकी दे डाली। हालांकि, मोदी सरकार ने अपनी बंदूकों पर भरोसा किया, न कि ड्रैगन के सामने आत्मसर्पण किया। यूरोप और एशिया ने 72 दिवसीय इस गतिरोध को अपनी सांसे रोककर देखा।

कई देशों ने भारत की उस नरम कूटनीति को पसंद किया, जिसके कारण चीन को अपने पांव पीछे हटाने पड़े। भारत –अमेरिका –जापान विश्व राजनीति में एक उभरता हुआ शक्तिशाली त्रिकोण है, जो चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए आम एजेंडे वाला एक नया गठबंधन है, जिस कारण बीजिंग इस विवाद से शांतिपूर्ण ढंग से निपटने के लिए मजबूत हो गया। इसलिए, त्रिपक्षीय दोस्ती ने चीन को बेचौन कर दिया है और अब वह एशिया में भारत को अलग–अलग करने के तरीकों की तलाश कर रहा है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने इस एशिया के साथ स्पष्ट रूप से संकेत दे दिया था, दरअसल चीन के घेरे करने का ही वह एक प्रयास था। दूसरी ओर, बीजिंग तेजी से अमेरिका के साथ अपने सैन्य शक्ति के बीच के अंतर को पाटने में लगा है और एशिया–प्रशांत क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 'बेल्ट एंड रोड पहल' और अपनी स्टिंग आफ पर्ल जैसी नीतियों का अनुसरण कर रहा है। एक बार फिर, दुनिया के बाकी हिस्सों को दोनों पक्षों को चुनना होगा ताकि एक साथ करने के लिए एक वैकल्पिक रणनीति सामने आ सके। भारत व्यापक रूप से अमेरिका की तरफ जाता हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि भारत – चीन संबंध 1962 के युद्ध के बाद कभी वास्तव में पटरी पर नहीं आ पाये। भारत को वाशिंगटन के साथ किसी भी तरह के उस नजदीकी सैन्य गठबंधन को लेकर सावधान रहना चाहिए, जो भविष्य में चीन और अमेरिका के बीच होने वाली किसी भी छद्म युद्ध को लेकर भारत को एक रंगमंच के रूप में बदल दे।

इसके अलावा, पाकिस्तान का इस्तेमाल भी चीन की ओर से इसी तरह किया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में, यह स्पष्ट नहीं हैं कि परमाणु शक्तियों के खिलाफ दो बड़े युद्ध मोर्च पर लड़ते हुए भारत की सहायता अमेरिका कैसे कर सकता है। इसलिए, चीन के खिलाफ संतुलन बनाएं रखने के लिए भारत को दुनिया की अग्रणी सेना की जरूरत है, जबकि अमेरिका को भारत की जरूरत है, क्योंकि यह एकमात्र विश्वसीनय भागीदार है, यह चीन से पार पाने के लिए पूर्वी एशिया में एक गठबंधन भी बना रहा है। इसके अलावा, जापान के साथ भारत का सम्बन्ध अमेरिका के साथ सम्बन्धों का एक उपसमुच्चय है, और इसके साथ ही साथ ये पारस्परिक जरूरतों की पूर्ति भी करते हैं, क्योंकि भारत को जापानी निवेश और प्रौद्योगिकी चाहिए, जबकि टोक्यों को पूर्वी एशियाई गठबंधन में भारत की भागीदारी की तलाश है।

उल्लेखनीय है कि 2013 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने एक ऐसी नयी आर्थिक संरचना पर से पर्दा उठाया था, जो दक्षिण चीन सागर से हिंद महासागर तक पानी के संपर्क निकायों के माध्यम से मध्य एशिया में अपने सामुद्रिक सिल्क रोड के साथ चीन के सिल्क रोड वाणिज्यिक क्षेत्र परियोजना से जुड़ जाएगा। सैद्धातिक रूप से यह व्यापारिक चाल 'दक्षिण एशिया और अफ्रीका' के लिए एशिया भर में एक नया सिल्क रोड बनाते हुए यूरेशिया में प्राचीन सिल्क रोड वाले देशों के साथ चीनी सम्पर्क बढ़ाने पर केंद्रित हैं। इस परियोजना का एक हिस्सा चीन और यूरेशिया के बीच सड़क सम्पर्क निर्माण पर केंद्रित है, जिसमें राजमार्ग और रेल संपर्क जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शामिल हैं। परियोजना का दूसरा हिस्सा समुद्री मार्गो से सम्बन्धित है, जो दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण

और अफ्रीका के पूर्वी तट के ऊपर और नीचे बंदरगाहों के साथ चीन को जोड़ देगा एक ओर अगर यह सड़क संपर्क स्थापित हो जाता है, तो यह व्यापार संपर्क मार्ग के अंतर्गत दुनिया की आबादी का 65 प्रतिशत, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का एक तिहाई और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं और सेवाओं का एक चौथाई शामिल हो जायेंगे।

निष्कर्ष :–

अन्ततः यही कहा जा सकता है कि भारतीय विदेश नीति नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सफलताओं के चरम पर पहुंच रही है। भारत विकसित राष्ट्रों की कगार पर पहुंचने को तैयार है। विश्व का छोटे से छोटा और बडे से बड़ा राष्ट्र आज भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना करने को आतुर है। एशिया की सुपर पावर तो भारत है ही, वह विश्व की महाशक्तियों के समकक्ष आता जा रहा है। चीन भले ही भारत का प्रतिद्वन्दी हो परन्तु हमारी क्षमताओं को वह भली–भांति जान चुका है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व से वह परिचित है कि भारत शान्तिप्रिय राष्ट्र है परन्तु राष्ट्रीय सीमाओं व अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं व राष्ट्रीय एकता और अखण्डता पर आंच आई तो किसी भी रूप में बर्दाश्त नहीं करेगा। ये उदाहरण अभी भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक और डोकलाम प्रकरण में पेश कर दिये हैं।

हमें पड़ौसी राष्ट्रों के साथ बातचीत का क्रम जारी रखना होगा, क्योंकि द्विपीक्षय संबंधों में अन्तराल नहीं आना चाहिए। पाकिस्तान और चीन के साथ आर्थिक व्यापारिक संबंधों के साथ ही सीमा विवाद के हल के लिए दबाव बनाया जाना चाहिए। पाकिस्तान से प्रायोजित आंतकी गतिविधियां यदि होती है तो तुरन्त और दो टुक प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व जनमत को अपने पक्ष में करना होगा। भारत को आर्थिक क्षेत्र में एवं सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न भी करना चाहिए क्योंकि उक्त क्षेत्र के आवश्यक साजो – सामान आयात करने में बहुत बड़ी राशि हमें दूसरे देशों को सोंपनी पड़ती है।

सुरक्षा के हथियार उपकरण भी सिर्फ आयात नहीं अपितु उनका उत्पादन भी शुरु किया जाना चाहिए। ये सत्य है कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्वस्तरीय पावर बना है और वैश्विक मामलों में निर्णायक की स्थिति में आ गया है। इसके पीछे मोदी की यात्रा कूटनीति का बहुत बड़ा हाथ था जिसमें उन्हें सफलता मिली है।

अमेरिका जैसी महाशक्ति आज भारत के साथ अच्छे संबंध रखने को आतुर है, तृतीय विश्व भारत के नेतृत्व को स्वीकार कर रहा है। यह श्रेय भारत की विदेश नीति निर्माण व संचालन करने वालों को ही जाता है। विदेश नीति का मोदी डाक्ट्रिन आज अपनी सफलता की कहानी बयां कर चुका है। इसके तहत भारत ने निर्भीक व स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमताओं का परिचय दिया है और 21 वीं सदी एशिया की होगी, इसे भी सार्थक कर दिया है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. खन्ना, बी0 एन0, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा0 लि0 नोएडा, नई दिल्ली, पंचम संस्करण–2014
2. पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पब्लिकेशन साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, संस्करण–2015
3. मकवाणा, किशेर, कॉमन मैन, नरेन्द्र मोदी, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली, संस्करण–2016
4. बघेल, बी0 एस0, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति, कैटर पिल्लर पब्लिशर्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण–2017
5. वैदिक, डा0 वेदप्रताप, मोदी की विदेश नीति वैदिक की नजर में, पब्लिकेशन– डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, संस्करण–2017
6. पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पब्लिकेशन– टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, संस्करण–2014
7. फडिया, बी0 एल0, भारत एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पब्लिकेशन– साहित्या भवन पब्लिकेशन, आगरा, संस्करण–2015
8. वीर, गौतम, महाशक्तियों की विदेश नीति, पब्लिकेशन– मैक मिलन पब्लिशर्स इंडिया लि0, दिल्ली, संस्करण–2013
9. खन्ना, वी0 एन0, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विकास पब्लिकेशन हाऊस प्रा0 लि0 नोएडा, नई दिल्ली, पंचम संस्करण–2014
10. पंत, पुष्पेश जैन, श्रीपाल, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धांत और व्यवहार, मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, संस्करणः 2014–15
11. जौहरी, जे0 सी0, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा राजनीति, स्टलिंग पब्लिशर्स प्रा0 लिमिटेड संस्करण–2011
12. पंत, पुष्पेश, भारत की विदेश नीति, पब्लिकेशन–टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, संस्करण–2010
13. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–2, अंक–71, संस्करण – फरवरी, 2018
14. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–1, अंक–70, संस्करण – जनवरी, 2018
15. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–2, अंक–59, संस्करण – फरवरी, 2017
16. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–1, अंक–58, संस्करण – जनवरी, 2018
17. राजस्थान पत्रिका, 22.11.2017, सम्पादकीय पृष्ठ
18. दृष्टिकोण मंथन (पाक्षिक), 1–15 दिसम्बर, 2014
19. https///hindi-theindianwire-com/Hkkjr&dh&fons'k&233153/
20. www-mea-gov-in